# एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म

**डॉ0 अनिता सेनगुप्ता**

उपनिषद् मानव आत्मा की आरम्भिक अन्तर्प्रेरणाओं एवं अनुभूतियों को आलोकित करने वाले प्रमाण ग्रन्थ हैं। वस्तुतः ये सभी युगों तथा सभी देशों के विचारों तथा जिज्ञासाओं पर आधारित हैं। उपनिषदों में उन प्रश्नों को उठाया गया है जो मानव के हृदय से गंभीर चिन्तन के क्षणों में उठते हैं। वैदिक ऋषियों ने अन्वेषण और जिज्ञासा के जिस मार्ग का सूत्रपात किया था, जगत के विषय में वही अनादि जिज्ञासा, उपनिषदों में भी अनेकशः मुखरित हुई–''क्या संसार का कारण ब्रह्म है? ब्रह्म का स्वरूप क्या है? उपनिषदों में एक मात्र ब्रह्म को ही सत्य माना गया। ईश्वर आत्मन्, ओम्, ऋत, अग्नि, पुरुष, यम, प्रजापति आदि अनेक विशेषण ब्रह्म के लिए प्रयुक्त हुए हैं।